

# मध्य प्रदेश की जीवन रेखा सदानीरा माँ नर्मदा

नर्मदा नदी का स्कंद पुराण में दिव्य रूप में वर्णन है। पुराण के अनुसार नर्मदा का जन्म भगवान शिव की कृपा से 12 वर्ष की दिव्य कन्या के रूप में मैकल पर्वत पर हुआ था। इसी प्रकार लोक कथाओं में नर्मदा का वर्णन राजा मैकल की पुत्री के रूप में है। वाल्मीकि रामायण में भी नर्मदा का उल्लेख है, महाभारत में नर्मदा को ऋक्षपर्वत से उद्भव माना गया है। भीष्मपर्व में नर्मदा का गोदावरी के साथ उल्लेख है। श्रीमद्भागवत गीता में रेवा और नर्मदा दोनों का एक स्थान पर उल्लेख है। शतपथ ब्राह्मण में रेवोत्तरस की चर्चा की गई है, जो पाटव चाक्र एवं स्थपति (मुष्ठा) था, जिसे सूत्रियों ने निकाल बाहर किया था। पाणिनि के एक वार्तिक ने 'महिष्मता' की व्युत्पत्ति 'महिष' से की है, इसे सामान्यतः नर्मदा पर स्थित माहिष्मती का ही रूपान्तर माना गया है। रघुवंश में रेवा (अर्थात् नर्मदा) के तट पर स्थित माहिष्मती को अणूप की राजधानी कहा गया है। गंगा की भाँति नर्मदा को देखने मात्र से पाप से मुक्त हो जाने की मान्यता रही है। श्री नर्मदाष्टकम में वर्णित है कि: "संबिंदु सिन्धु सुस्खल तरंग भंग रंजितम्, द्विषत्सु पाप जात जात कारि वारि संयुतम्। कृतान्त दूत काल भुत भीति हारि वर्मदे, ल्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे"।

नर्मदा नदी का उद्गम मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले में विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के पूर्वी संधिस्थल पर स्थित अमरकंटक (22°40'00" उत्तरी अक्षांश और 81°45'00" पूर्वी देशांतर) में नर्मदा कुंड से हुआ है। नदी पश्चिम की ओर सोनमुद से बहते हुए, एक चट्टान से नीचे गिरती हुई कपिलधारा जलप्रपात बनाती है। दक्षिण-पूर्व की ओर, रामनगर और मंडला (25 किमी) के बीच, बंजर नदी बाईं ओर से जुड़ जाती है। नर्मदा नदी उत्तर-पश्चिम में बहती हुई जबलपुर शहर में भेड़ाघाट के निकट 30 मीटर गहरा जलप्रपात बनाती है जो कि धुआँधार के नाम से प्रसिद्ध है। संगमरमर चट्टानों से निकलते हुए नदी अपनी पहली जलोढ़ मिट्टी के उपजाऊ मैदान में प्रवेश करती है, जिसे नर्मदा घाटी कहते हैं।

यह लगभग 320 किमी तक फैली हुई है तथा दक्षिण में नदी की औसत चौड़ाई 35 किमी है। वहीं उत्तर में, बर्ना-बरेली घाटी पर सीमित होती जाती है जो होशंगाबाद के बरखरा पहाड़ियों के पश्चात् समाप्त होती है। नर्मदा नदी में दक्षिण की ओर से कई महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ आकर इसमें मिलती हैं और ये सतपुड़ा पहाड़ियों के उत्तरी ढलानों से पानी लाती हैं जिनमें शेर, शक्र, दुधी, तवा (सबसे बड़ी सहायक नदी) और गंजल शामिल हैं।

**नर्मदा घाटी एक भ्रंश घाटी, जो पृथ्वी की पर्पटी के प्राचीन प्रसार के कारण दोनों ओर के ब्लॉकों के सापेक्ष नीचे जाने से निर्मित हुई है, जिन्हें नर्मदा उत्तर भ्रंश और नर्मदा दक्षिण भ्रंश के रूप में जाना जाता है तथा नदी के प्रवाह के समानांतर है।**

हिरन, बारना, चोरल, करम और लोहर, जैसी महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ उत्तर से आकर जुड़ती हैं। हिरदन, तिन्दोनी, बारना, कोलार, मान, उरी, हथनी, ओरसांग सहायक नदियाँ दक्षिण से आकर मिलती हैं। इस प्रकार छोटी-बड़ी मिलाकर 41 नदियाँ नर्मदा से मिलकर अरब सागर तक जाती हैं किंतु नर्मदा-जलग्रहण क्षेत्र में सम्मिलित होने वाली इन सहायक नदियों में 19 प्रमुख हैं।

ओंकारेश्वर द्वीप, जो भगवान शिव का मंदिर है, मध्य प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण नदी द्वीप है। सिकता और कावेरी नदी, खण्डवा मैदान के नीचे आकर ही नर्मदा नदी से मिलती हैं। इसके पश्चात् नर्मदा मंडलेश्वर मैदान (180 किमी लंबा) में प्रवेश करती है। बेसिन की उत्तरी पट्टी केवल 25 किमी है। नर्मदा नदी बड़ोदरा और नर्मदा जिले के मध्य बहती है और फिर गुजरात राज्य के भरूच जिले के समृद्ध मैदान के माध्यम से बहती है। नदी की चौड़ाई मकराई पर लगभग 1.5 किमी, भरूच के पास 3 किमी तथा कैम्बे की खाड़ी के मुहाने में 21 किमी तक फैला हुआ बेसिन बनाती हुई अरब सागर में विलीन हो जाती है। यह 3 राज्यों से होकर बहती है तथा कुल लंबाई 1312 किमी है, जिसमें से 1077 किमी मध्यप्रदेश में, शेष महाराष्ट्र और गुजरात की सीमा से होकर बहती है।

नर्मदा घाटी एक भ्रंश घाटी, जो पृथ्वी की पर्पटी के प्राचीन प्रसार के कारण दोनों ओर के ब्लॉकों के सापेक्ष नीचे जाने से निर्मित हुई है, जिन्हें नर्मदा उत्तर भ्रंश और नर्मदा दक्षिण भ्रंश के रूप में जाना जाता है तथा नदी के प्रवाह के समानांतर है। नर्मदा ब्लॉक और विंध्य एवं सतपुड़ा ब्लॉक या होस्ट के मध्य की सीमा को चिह्नित करते हैं जो नर्मदा ग्रैबेन के सापेक्ष बढ़ गए थे। नर्मदा के जलग्रहण में सतपुड़ा के उत्तरी ढलान और विंध्य की खड़ी दक्षिणी ढलान शामिल हैं। नर्मदा घाटी को भारत में जीवाश्म विज्ञान के अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस क्षेत्र में कई डायनासोर जीवाश्म पाए गए हैं जिनमें टाइटोसॉरस इंडिकस शामिल है जो 1877 में रिचर्ड लिडेकर द्वारा खोजा गया था। राजासॉरस नर्मडेन्सिस जीवाश्म की खोज हुई है।

मंडला के पास नर्मदा घाटी, वास्तव में लगभग 40 मिलियन वर्ष पहले, कैम्ब्रियन तृतीयक युग के बाद तक प्रायद्वीपीय भारत में समुद्र का गहरा जलप्लावन था। इसका अर्थ है कि नर्मदा एक छोटी नदी थी जो मंडला के ऊपर अंतर्देशीय समुद्र में समाप्त हो गई थी, और भूवैज्ञानिक हलचल के कारण वर्तमान भ्रंश घाटी का निर्माण हुआ, जिसके माध्यम से नर्मदा नदी और ताप्ती नदी अपनी वर्तमान यात्रा में बहती हैं। ये सिर्फ अनुमान है जिस पर अभी विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। सोनाटा लीनियामेंट जोन सतपुड़ा क्रस्टल ब्लॉक के दो किनारों पर टेक्टोनिक मूल के दो क्वार्टरनरी घाटियों का प्रतीक है। नर्मदा दक्षिण (सतपुड़ा उत्तर) भ्रंश और सतपुड़ा दक्षिण भ्रंश जो सतपुड़ा प्रखंड के दो छोरों को चिह्नित करते हैं, और मोहो स्तर तक फैले हुए हैं। उत्तर में नर्मदा क्वार्टरनरी बेसिन और दक्षिण में ताप्ती-पूर्णा बेसिन दो ग्रैबेन हैं जो लीनियामेंट क्षेत्र में अवसादन के प्रमुख स्थान का निर्माण करते हैं।

नर्मदा का इस ग्रैबेन से स्पष्ट रूप से सीधा मार्ग है जो पू. उ. पू.-प. द. प. से पू.-प. लीनियामेंट द्वारा नियंत्रित है। यह उत्तर में विंध्य और दक्षिण में सतपुड़ा से घिरा है, यह बार-बार अपरदन और निक्षेपण से प्रभावित है। इसमें लैंडस्केप आर्किटेक्चर को फिर से आकार दिया, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों को वर्गीकृत किया है। यह विभिन्न मोर्फोजेनेटिक क्षेत्रों, भूमि रूप तलों, जल निकासी के विन्यास, स्थलाकृति, क्षरण, अनाच्छादन में गतिशील क्षरण और निक्षेपण गतिविधि द्वारा भू-भाग विकास की विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरा है। नर्मदा नदी के किनारे विभिन्न वन और अभयारण्य स्थित हैं।

इस नदी के किनारे कुछ बेहतरीन इमारती लकड़ी के जंगल पाए जाते हैं। इस नदी के किनारे स्थित भारतीय सागौन के पेड़ हिमालय पर्वत श्रृंखला की तुलना में बहुत पुराने हैं। नर्मदा नदी के किनारे स्थित प्राचीन मानव से संबंधित स्थलों को पर्यटकों के साथ-साथ इतिहासकारों में भी काफी रचिकर माना जाता है।



प्रोफेसर रवीन्द्रनाथ तिवारी  
(शिक्षाविद्)

भीमबेटका की विस्तृत गुफाएँ भोपाल के उत्तर पूर्व में लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर नर्मदा घाटी की एक ढाणी (ढालनुमा) संरचना में स्थित हैं। ये गुफाएँ भोपाल और होशंगाबाद राजमार्ग के बीच स्थित हैं और पूर्व ऐतिहासिक रॉक शेल्टर चित्रों को चित्रित करती हैं। इन चित्रों को भारत के इतिहास में एक अनमोल काल माना जाता है, जिन्हें विंध्य के शिखर पर तराशा गया है।

डॉ. अरुण सोनक्रिया ने नर्मदा घाटी में जीवाश्मों में हाथी, घोड़े, दरियाई घोड़ा, जंगली भैंसों के जीवाश्म के साथ सीहोर के हथनोरा में 5 दिसंबर 1982 को 70 हजार वर्ष पुराने मानव के कपाल अवशेष खोजे थे। हथनोरा में नर्मदा तट पर खुदाई से मानव कपाल प्राप्त हुआ है। प्राचीन मानव को वैज्ञानिकों द्वारा नर्मदा मानव का नाम दिया गया है। हथनोरा के सामने के धांसी और सूरजकुंड में नर्मदा के उत्तरी तट पर प्राचीनतम विलुप्त हाथी (स्टेगोडॉन) के दोनों दांत तथा ऊपरी जबड़े का जीवाश्म भी उन्होंने ही खोजा था। सोनक्रिया के अनुसार मानव अफ्रीका नहीं भारत में जन्मा है। हथनोरा गांव से आदि मानव के कंकाल (खोपड़ी का भाग) मिले, जिसका आकलन इएसआर (इलेक्ट्रॉन स्पिन रेजोलेंस) डेटिंग पद्धति से किया गया था। जिससे पता चला कि यह कंकाल 3,50,000 वर्ष पुराना है। यहाँ से मानव के विकास की कहानी भारत में शुरू होती है। नर्मदा घाटी परियोजना के अंतर्गत कई बाँध और नहरें बनाई जानी हैं। इस परियोजना के पूर्ण होने पर कई लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई होगी और विद्युत उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा जो क्षेत्र एवं राष्ट्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा।